"जनजाति उपयोजना क्षेत्र (T.S.P.) में कार्यरत सामान्य एवं जनजाति शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ. प्रेमलता गाँधी

प्रस्तावना :– शिक्षा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का अर्थ है जीवन का सर्वांगीण विकास करना है और इन सब कार्य को पूर्ण करने का दायित्व अध्यापक का है।

प्राचीन समय में अध्यापक को जो सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त थी वह वर्तमान में समाप्त होती जा रही है। इस प्रकार की असन्तुष्टि के कारणों को खोज करने का प्रयास करने से लगेगा कि व्यक्ति की अनेक इच्छाएँ, आवश्यकता होने से उसे संतुष्टि के लिए प्रयास करेगा पर यह आवश्यक नहीं कि वह इस कार्य में सफल हो। इसके मार्ग में अनेक बाधाएँ आ सकती है। ये बाधाएँ उसकी इच्छाओं को पूर्ण या आंशिक रूप में भंग कर सकती है। इससे उसकी इच्छाओं को पूर्ण या आंशिक रूप में भंग कर सकती है। इससे उसकी इच्छाओं में अवरोध उत्पन्न होता है।

एक ही व्यवसाय में रहने पर समान योग्यता रहते हुए भी अध्यापकों की समस्याएँ, अपेक्षाएँ अलग–अलग हो सकती है। समान परिस्थितियॉ, समय, स्थान के अनुसार समस्याओं का स्वरूप बदलता रहता है सामाजिक, आर्थिक, प्रशासकीय परिस्थितियॉ समस्याओं को भिन्न–भिन्न रूप देती है।

जनजाति उपयोजना क्षेत्र से तात्पर्य राज्य के ऐसे स्थान या क्षेत्र जहाँ विकास की यात्रा अभी तक नही पहुँच पाई है ये क्षेत्र शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से काफी पिछड़े होते है। यहाँ के लोग अधिकतर वनवासी व आदिवासी होते है। इसलिए वहॉ स्वास्थ्य, सुरक्षा, सामाजिकता, नैतिकता पतन की ओर अग्रसर होती है।

जनजाति उपयोजना क्षेत्र के विद्यालय की स्थिति भी काफी सोचनीय है। जनजाति उपयोजना क्षेत्र में संचालित विद्यालय को यहॉ की परिस्थितियॉ काफी कद तक प्रभावित करती है यहॉ का वातावरण, एकान्त, यातायात का अभाव, लड़ाई–झगड़ा, जगल आदि विद्यालय वातावरण को प्रभावित करते हैं।

समस्या के उद्देश्य :–

1. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत समग्र शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन।
2. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन।
3. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत जनजाति शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन।
4. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों एवं जनजाति शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ :– परिकल्पनाओं के अभाव में शोध का सही दिशा में अग्रसर होना असम्भव है।

- जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों एवं जनजाति शिक्षकों की समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन की परिसीमाएँ :– प्रस्तुत शोध को राज्य सरकार द्वारा घोषित जनजाति उपयोजना क्षेत्र डुँगरपूर जिले की तहसीलों तक सीमित रखा गया है।

न्यादर्श :–

शोधकर्ता ने यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया है। न्यादर्श डूँगरपुर जिले के टी.एस.पी. क्षेत्र सामान्य 60 शिक्षक व जनजाति 60 शिक्षकों का चयन किया गया।

शोध विधि :–

शोध विधि की समस्या को समझने के बाद तथा संबंधित साहित्य अध्ययन अवलोकन के पश्चात शोधकर्ता ने सर्वेक्षण को उपयुक्त समझा क्योंकि यह शोध समस्या अनुसंधान की **सर्वेक्षण विधि** से सम्बन्धित है।

सर्वेक्षण विधि इन वर्तमान तथ्यों का उद्घाटन करती है जो समस्या में निहित है। इस विधि से तथ्यों का निष्कर्ष निकालने में एवं उनकी व्याख्या करने में अपेक्षाकृत उत्तर की प्राप्ति नहीं होती है अपितु समस्या से सम्बन्धित तथ्यों की वर्तमान स्थिति भी स्पष्ट होती है।

शोध उपकरण :–

इस अध्ययन हेतु कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं है अतः सामान्य एवं जनजाति शिक्षकों की समस्याओं प्रश्नावली स्वनिर्मित (स्केलिंग) उपकरण का निर्माण कर जनजाति उपयोजना क्षेत्र के विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का पता लगाया जा सकता है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

शैक्षिक अनुसंधान में न्यादर्श प्राप्त समंकों व दत्तों का किसी विशेष तकनीकी द्वारा सामान्यीकरण कर परिणामों की ओर अग्रसर उपयोगी होता है। अतः प्रस्तुत शोध में दन्त विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है।

1. मध्यमान

2. मानक विचलन
3. टी–मूल्य

आँकड़ों का विश्लेषण :

जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों व जनजाति शिक्षकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या–1.1

क्र. सं.	क्षेत्र	मध्यमान		मानक विचलन		टी–मान
		सामान्य शिक्षक	जनजाति शिक्षक	सामान्य शिक्षक	जनजाति शिक्षक	
1	संसाधनों की समस्याएँ	21.4	21.4	2.03	2.86	0.04
2	विभागीय समस्याएँ	25.18	21.5	3.97	3.67	0.04
3	विद्यालय वातावरण संबंधी समस्याएँ	22.96	25.38	2.14	2.32	0.02
4	शैक्षिक समस्याएँ	23.30	22.40	3.00	3.00	0.18

विश्लेषण :

1. **संसाधनों की समस्याएँ संबंधी –** जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों व जनजाति शिक्षकों की समस्याओं के संसाधनों सम्बन्धी समस्याओं के दत्तों का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि इन शिक्षकों संसाधनों संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता।

2. **विभागीय समस्याएँ संबंधी –** जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों व जनजाति शिक्षकों की की विभागीय समस्याओं संबंधी के दत्तों का का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि इन शिक्षकों विभागीय समस्याओं का सामना करना पड़ता।

3. **विद्यालय वातावरण संबंधी समस्याएँ** – जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों व जनजाति शिक्षकों की विद्यालय वातावरण सम्बन्धी समस्याओं के दत्तों का का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि इन शिक्षकों विद्यालय वातावरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता।

4. **शैक्षिक समस्याएँ संबंधी** – जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य शिक्षकों व जनजाति शिक्षकों की शैक्षिक सम्बन्धी समस्याओं के दत्तों का का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि इन शिक्षकों शैक्षिक संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में दत्तों के विस्तृत विश्लेषण एवं व्याख्या के परिणाम के रूप में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है वह इस प्रकार है–

1. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत समग्र (सामान्य एवं जनजाति) शिक्षकों की समस्याओं में संसाधनों सम्बन्धी समस्या का अभाव पाया गया। जैस विद्यालयों में कक्षा–कक्ष पर्याप्त मात्रा व छात्र अनुपात में नही है, विद्यालयों में फर्नीचर व विघुतीकरण की समस्या पाई जाती है। विद्यालयों में जो पुराने कक्षा–कक्ष बने हुऐ उनमें में भी मरम्मत की आवश्यकता है, विद्यालय में शिक्षण सहायक सामग्री का अभाव पाया जाता है।
2. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत समग्र(सामान्य एवं जनजाति)शिक्षकों की समस्याओं (समग्र न्यादर्श) में विभागीय समस्या का सामना करना पड़ता है। विभागीय कार्यालयों द्वारा इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का निदान तत्परता से नही किया जाता है। वेतन संबंधी बजट को भी समय पर आवंटित नही किया जाता, इनके स्थानारन्तरण व पदोन्नति में शिथिलता बरती जाती है। यह विद्यालय मुख्यालय से काफी दूर होने से विभागीय कार्य के लिए आने–जाने में शिक्षकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता जिससे समय व धन की बर्बादी होती है।
3. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत समग्र(सामान्य एवं जनजाति)शिक्षकों (समग्र न्यादर्श) में विद्यालय वातावरण सम्बन्धी क्षेत्र में समस्याऍ पाई गई। शिक्षकों का बालकों के द्वारा अपशब्दों का प्रयोग, शरारत सम्बन्धी, गणवेश सम्बन्धी, कक्षा से बाहर निकलना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
4. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत समग्र(सामान्य एवं जनजाति) शिक्षकों (समग्र न्यादर्श) में शैक्षिक संबंधी क्षेत्र में समस्याऍ पाई गई। जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थी शिक्षण कार्य में सक्रिय रूप से भाग नही लेते है। विद्यार्थियों में पलायन की समस्या अधिकतर पाई जाती तथा गृहकार्य में कोई रूचि नही दिखाते है। विद्यार्थी अनुशासन में नही रहते है। विद्यालयो का वातावरण शैक्षणिक बनाने में शिक्षकों को दिक्कत आती है। शिक्षकों को शिक्षण कार्य संबंधी नवीन नवाचारों की समस्या का सामना करना पड़ता है।
5. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य एवं जनजाति शिक्षकों का आपस में तालमैल नहीं बैठता है जिससे भी शैक्षणिक कार्य में समस्या आती है।

6. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य एवं जनजाति शिक्षकों जो ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत है उन्हें आवगमन के साधनों की समस्या का सामना करना पड़ता है और कई किलोमीटर पैदल चलकर विद्यालय पहुँचना होता है।
7. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों का ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता है।
8. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य एवं जनजाति शिक्षकों विद्यार्थियों के अभिभावकों के निरक्षर होने के कारण विभिन्न शैक्षिक योजनाओं की जानकारी प्रदान कर एवं छात्रों को विद्यालयों के प्रति आकर्षित करने में दिक्कत आती है।
9. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य एवं जनजाति शिक्षकों के मध्य सामजंस्य का थोड़ा सा अभाव पाया जाता है।
10. जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कार्यरत सामान्य एवं जनजाति शिक्षकों को विद्यालयों में विषयाध्यापकों की कमी तथा विद्यालय में ICT लैब की समस्या का सामना भी करना पड़ता है।